आलोचना का परिप्रेक्ष्य

सम्पादक

रोहिताश्व

विद्या प्रकाशन

'सी' 449 गुजैनी, कानपुर-22

'आलोचना का परिप्रेक्ष्य' नामक प्रस्तुत पुस्तक यू०जी०सी० एकेडेमिक स्टाफ कालेज, गोवा विश्वविद्यालय के अन्तर्गत आर्थिक सहयोग से हिन्दी पुनश्चर्या पाठ्यक्रम - 2005 हेतु प्रकाशित

ISBN : 81-88554-10-3

मूल्य : तीन सौ पचास रुपये मात्र

☛ पुस्तक	:	**आलोचना का परिप्रेक्ष्य**
☛ संपादक	:	रोहिताश्व
☛ प्रकाशक	:	**विद्या प्रकाशन** सी-449, गुजैनी, कानपुर - 22 ☎ : (0512) - 2285003 Mo. : 9415133173
☛ संस्करण	:	प्रथम, 2005 ई०
☛ मूल्य	:	Rs. 350.00
☛ शब्द-सज्जा	:	च्वाइस कम्प्यूटर ग्राफिक्स बर्रा, कानपुर
☛ मुद्रक	:	अजित आफसेट रामबाग, कानपुर

ALOCHANA KA PARIPREKSHYA

Edited By : Rohitashwa

9

तुलनात्मक साहित्य : स्वरूप एवं नयी दिशाएँ

✍ *डॉ. आनन्द पाटिल*

प्रस्तावना : आज तक तुलनात्मक साहित्य की सभी व्याख्याएँ विवादास्पद रही हैं । इसका उपहास भी किया जाता है कि ''कम्पेरेटेवि लिटरेचर' जैसा तुलनात्मक अध्ययन अपने समग्र स्वरूप में सब्जीगत आलू-बैंगन का सा अध्ययन होता है । पर वैश्विक परिप्रेक्ष्य में इस अध्ययन की अधुनातन प्रवृत्तियों के आधार अध्ययन से सभी गलतफहमियाँ दूर हो जाती हैं । 1993 में तुलनात्मक साहित्य की स्थिति दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है । उसका खूब विस्तार हो रहा है ।

पहले पाश्चात्य तुलनात्मक साहित्य की परिधि-सीमा में पौर्वात्य साहित्य सम्मिलित नहीं किया गया था । अभी Cultural Criticism 'संस्कृति समीक्षा' नामक नया ब्राण्ड विकसित हो गया है । भारत जैसा और कोई देश तुलनात्मक साहित्याभ्यास के लिए इस दुनिया में नहीं है । लेकिन दुर्भाग्य से हमें भारतीय साहित्य की भारतीयता निश्चित करने के लिए राष्ट्रीय संगोष्ठियों का आयोजन करना पड़ता है । आगामी भविष्य में तुलनात्मक साहित्य अध्ययन की प्रवृत्ति बढ़ती जायेगी, ऐसी मेरी अपेक्षा है ।

विश्वविद्यालय के के अध्ययन केन्द्रों में अलग-अलग भाषा-विभाग बन्द किये जायेंगे, संस्कृति अभ्यास केन्द्रों में उनका अवस्थांतर करना पड़ेगा । अब हमें साहित्य का ही नहीं संस्कृति का भी अभ्यास करना चाहिए । अलग-अलग भाषा-साहित्य का अध्ययन पुरानी पद्धति में परिगणित होगा । ये यहाँ परिवर्तन अत्याधुनिक और प्रगतिशील देशों में हो रहे हैं । लेकिन हमारे देश में लॉर्ड मैकाले के पोते बहुत होने के कारण नव उपनिवेश वाद (नव वसाहतवाद) जैसे का तैसा रखना चाहते हैं । यह यथास्थितिवादी नियति हमें कहाँ ले जायेगी विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने तुलनात्मक साहित्याभ्यास को पहली प्रायरिटी प्रमुखता दी है । बहुत बड़ी आर्थिक पूँजी उन्होंने संशोधन-लेखन के लिए अलग रखी है । लेकिन भारत में तुलनात्मक साहित्य अध्ययन को हमेशा उपेक्षित ही रखा जाता है । क्योंकि तुलना होने से सांस्कृतिक नेतृत्व करने वाले वर्ग का छद्म खुल जाता है । ज्यादा दिनों तक यह छद्म नहीं चल पायेगा । ग्लोबलाइजेशन जागतिकीकरण की प्रक्रिया का तुलनात्मक साहित्याभ्यास अनिवार्य होगा ।

व्याख्या : तुलनात्मक साहित्याभ्यास याने एक से अधिक भाषाओं में लिखे गये साहित्य का (इसमें साहित्य सिद्धान्त और समीक्षा भी सम्मिलित है) विरोध, सादृश्यता, उद्गम, प्रभाव द्वारा एक्जामिनेशन करना; अथवा अलग भाषाएँ बोलने वाले समूह के

बीच में होने वाले साहित्य सम्बन्ध और आदान-प्रदान का अध्ययन है । वाङ्मय सम्बन्ध ... और ज्ञान-श्रद्धा के अलग-अलग क्षेत्र (याने पेंटिंग्स शिल्प, आर्किटेक्चर, संगीत), तत्व ज्ञान, इतिहास, समाजशास्त्र (याने राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र), शास्त्र, धर्म इनका अध्ययन है । एक देश की सीमा के परे जाकर ही साहित्य का अध्ययन होता है - हैनरी एच. एच. रेमाक ।

"कम्पेरेटिव लिटरेचर : इट्स डेफिनेशन एण्ड फंक्शन" यह व्याख्या भी परिपूर्ण नहीं है । लेकिन उसके आधार पर हम आलोचनात्मक आवर्तक आयाम तक पहुँच सकते हैं ।

प्रमुख गुण परिधि और सापेक्षता :

(1) ऊपर यह स्पष्ट किया गया है कि तुलनात्मक साहित्य के विचारकों से अभी तक जगत की बहुत सारी भाषाओं का समावेश तुलनात्मक साहित्याभाव के लिए किया है । पूर्व और पश्चिम का भेद अभी कम हो रहा है । अन्तर्राष्ट्रीय तुलनात्मक साहित्य संगठन द्वारा पारित किए गए प्रस्ताव में दो प्रमुख मानक निश्चित किये गये हैं । एक भाषिक साहित्यांतर्गत तुलनात्मक आलोचना अंशतः तुलनात्मक साहित्य कहा जाता है । दो भिन्न भाषा-संस्कृति के साहित्य की तुलना पूर्ण रूप से तुलनात्मक साहित्य के रूप में स्वीकृत की गयी है । चाहें देश एक ही हो लेकिन भाषा और संस्कृति भिन्न होना चाहिए । इस बारे में भारतीय संस्कृति के तुलनात्मक साहित्य के लिए ज्यादा स्कोप मिलेगा । लेकिन एकेडेमिक सर्किल में अभी प्राथमिक स्तर पर ही तुलना हो रही है। उदाहरणार्थ मराठी लेखक की हिन्दी लेखक से तुलना करना ये सामान्य दर्जे का अध्ययन कार्य व आलोचना कर्म होगा । तुलनात्मक साहित्याभ्यास के सैंकड़ों अत्याधुनिक प्रकार कें बारे में थोड़ी देर के बाद विवेचना करेंगे ।

(2) तुलनात्मक साहित्याभ्यास में भाषोत्तरित अनुवादित ग्रन्थ पर ही रहना उचित नहीं है । क्योंकि यह तुलना प्राथमिक स्तर की होती है । दूसरी भाषा के ग्रन्थ तुलनाकार को मूल स्वरूप में ही पढ़ने चाहिए । तुलनात्मक साहित्याभ्यास से भाषांतरों की यह एक अलग उपशाखा मानी जायेगी ।

(3) प्रारम्भ में तुलनात्मक साहित्याभ्यास मूलाधार शोध और प्रभाव अध्ययन पर ही केन्द्रित हुआ था । इसमें कौन-सा राष्ट्रीय साहित्य प्रभावशाली रहा । इस सम्वन्ध में प्रभामण्डल बनाये गये । ऐसे अभ्यास को ऐसे वेलेक ने "सांस्कृतिक जमा खर्च का हिसाब कहकर Condemn निरस्त किया । 1952 में अमेरिका में तुलनात्मक साहित्याभ्यास पर बहुत बड़ी वहस हुई । यह सब अपने देश की श्रेष्ठता के स्तर पर मापा गया । मसलन राष्ट्रीय भाव के तहत फ्रेंच भाषा का अँग्रेजी साहित्य पर प्रभाव आँका गया । हमारे देश में भी अँग्रेजी साहित्य का प्रभाव हिन्दी एवं मराठी आदि भाषा-साहित्य पर आँका गया है । अमेरिका में आयोजित 1942 की संगोष्ठी के साहित्याभ्यास की तुलनात्मक पद्धति के बारे में वहुत सी गलतफहमियाँ दूर हुयीं ।

भारत में ऐसा नहीं हो पाया है । बड़े-बड़े बुजुर्ग प्रोफेसरों का तुलनात्मक साहित्याभ्यास निरर्थक हैं । ऐसी निरर्थक बातें करते हैं । उनसे मेरी विनती है कि आप सिर्फ 'वर्ल्ड लिटरेचर टुए' 69.2 स्प्रींग 1995 का तुलनात्मक साहित्याभ्यास का विशेषांक पढ़ लें। इस क्षेत्र में कितनी व्यापक प्रगति हुई है ये आपको मालूम पड़ेगा और आपकी आँखें खुल जायेंगी । पर निद्रा का अभिनय करने वाले को कौन जगा सकता है ?

(3) बहुभाषिकता-बहुसांस्कृतिकता और बहुराष्ट्रीयता का गहराई से अध्ययन इसी अन्तरविद्यावर्ती ज्ञान शाखा में हो सकता है । इसमें राजनीति और प्रतिबद्धता का आयाम महत्वपूर्ण होता है । नहीं तो एशिया में इस ज्ञानशाखा पर पाबन्दी लगायी नहीं जाती । अब वह उठायी गयी है । क्योंकि यूरोमेरिकन विचारधारा का वर्चस्व उन्हें मंजूर नहीं था । बड़ी बहस के बाद यह समझौता हो गया है ।

(4) अन्तर्राष्ट्रीय और कॉस्मॉपॉलिटनीज्म : ये तुलनात्मक साहित्याभ्यास के प्रमुख उद्देश्य एवं घटक रहे हैं । उनका उपहास एवं विरोध तथाकथित राष्ट्रवादी करते रहेंगे । लेकिन कभी गेटे, आर्नोल, टैगोर जैसे बुजुर्गों ने विश्वसाहित्य का स्वप्न रचा था । यह संकल्पना वास्तविक रूप में लाने के लिए तुलनात्मक साहित्य का एकमात्र रास्ता है । भारतीय या राष्ट्रीयता का दर्शन तुलनात्मक अध्ययन से ही तय हो जाता है । साहित्य की सीमाओं में इसे तय करना कठिन है । फिर भी साहित्य को तुलनात्मक साहित्य अभ्यास के लिए निम्न तीन प्रकार के वर्गीकरण में देखने की पेशकश होगी -

राष्ट्रीय साहित्य	तुलनात्मक साहित्य	सर्वसाधारण वाङ्मय
हेरॉल्ड ब्लपूम द एंगजापूरी ऑफ इन्फ्लुएन्स 1973 संस्कृत विशिष्ट ← → → ←	भालचन्द्र नेमाडे द इम्पैक्ट ऑफ इंग्लिश ऑन मराठी 1990 कोहली मोहिन्दर, द इन्फ्लुइन्स ऑफ द वेस्ट ऑन पंजाबी लिटरेचर 1969 मिश्रा जे. पी. शेक्सपियर्स इम्पैक्ट ऑन हिन्दी लिटरेचर 1970 संस्कृत शैली ← → वाङ्मय इतिहास वाङ्मय सिद्धान्त	एफ० एल० ल्यूकस दि डिक्लाईन एण्ड काल ऑफ रोमंटिक आयडियल 1937 हिन्दी छायावाद रहस्यवाद और अन्य भारतीय संरचना शैली वैश्विक सौन्दर्य शास्त्रीय ← अध्ययन →

(5) तुलनात्मक साहित्याभ्यास की गतिमानता, विविधता, गतिशीलता और अन्तर्विद्यावर्तिता इन वैशिष्ट्यों के कारण अन्य आलोचना पद्धतियों की मर्यादाओं और eccentricity अतिवादिता को नकारा जा सकता है ।

(6) अन्य समीक्षा सिद्धान्त और अभ्यास पद्धतियों में उपेक्षित रहे क्षेत्र को तुलनात्मक साहित्य में उचित स्थान मिलता है । उत्तर वसाहतवादी (उपनिवेशवादी)

साहित्य, स्त्रीवादी साहित्य में वाङ्मय (समलिंगी साहित्य), काला साहित्य ऐसे असंख्य साहित्य शाखाओं को पश्चिमी समीक्षा में कोई वरीयता कभी नहीं मिली थी । अब अल्पसंख्याको के विचारव्यूह प्रबल होने के कारण पश्चिमी आलोचना पद्धति पर उसका असर पड़ रहा है ।

(7) तुलना के कारण साहित्याभ्यास में व्यक्तिनिष्ठता का ढोल नहीं पीटा जा सकता । भेदवादी difference tailist आलोचना में साम्य, भेद, संकर, विच्छेद, स्वीकार, नकार वगैरह प्रक्रिया अधिक सूक्ष्म स्तर पर स्पष्ट की जा सकती है ।

(8) तुलनात्मक साहित्याभ्यास ने नवमानवतावाद को जन्म दिया है । साहित्यिक सम्बन्ध स्पष्ट करना उनका प्रमुख उद्देश्य रहता है ।

(9) सबसे बड़ा फायदा हुआ है कि इसमें एकसूत्र की one sided और आत्मपरक, आत्म स्तुतिवाला तानाशाही परक साहित्येतिहास out बहिष्कृत कर दिया गया है । अब हमें उपरवाला इतिहास (हिस्ट्री फ्राम अबाह्व) के स्थान पर हमें संतुलित तुलनात्मक नीचे से ऊपर जाने वाला (हिस्ट्री फ्राम विलो) तुलनात्मक साहित्येतिहास चाहिए । इन दिनों Micro History सूक्ष्म इतिहास पद भी चर्चित हो रहा है ।

III. अभ्यास पद्धति (मेथड-Methods) :

तुलनात्मक साहित्याभ्यास में कभी-कभी निश्चित दृष्टिकोण या पद्धति का अभाव लगता है । तुलना सिर्फ स्वैर-स्वैच्छिक हिसाब-किताब है, ऐसे बहुत सारे आरोप इस अन्तर्विद्यावर्ती विद्याशाखा पर लगाये गये हैं । लेकिन चर्चित विदुषी ऑन बलकियन ने तुलनात्मक साहित्याभ्यास की तुलना पिरामिड से की है । इधर मेथड बनाकर आलोचना नहीं की जाती । अभ्यास विषय के उद्देश्य ही उनको निश्चित रूप देते हैं । दृष्टिकोण एक ही पसन्द नहीं किया जा सकता । उदाहरण कौन-सा भी लो प्रेमचन्द का मराठी उपन्यास पर प्रभाव ऐसा विषय चुनने में आपका उद्देश्य कौन-सा है ? यदि आप हिन्दी की ओर से बातें करें तो हिन्दी प्रसार, माध्यम, अध्यापक, भाषांतरकार, ऐतिहासिक कालखण्ड, प्रकाशन, दर्जा आदि पर विचार करें तो वह साहित्यिक भाग्य नामक तुलनात्मक अध्ययन होगा । यदि आप मराठी की ओर से देखें तो आपको प्रेमचन्द पढ़ने वाला मराठी लेखक, उनका वर्ग रहने का ठिकाना, शिक्षण, धर्म जांत-पांत, सुविधाओं, मनोरचना आदि बातों पर ध्यान देना होगा । ये अभ्यास, अनुकरण, वांङ्मय चौर्य, गर्भ पतित प्रभाव, फ्लू निरोगी प्रभाव आदि स्तर पर करना पड़ेगा । इसमें दोनों ओर के लेखक केन्द्र स्थानी रहेंगे । लेकिन यदि आप प्रेमचन्द का मराठी भाषा में स्वीकार (रिसेप्शन) ऐसा विषय चुनें तो आपको रिसेप्शन स्वीकार करने वाली स्थितियों पर सोचना पड़ेगा । फिर भी ये अभ्यास एक देशीय, मूलभूत भारतीय संस्कृत साहित्य और भाषा परम्परा के आधार पर होगा । इसका परिप्रेक्ष्य और मर्यादा भी अलग होगी, "शेक्सपियर का भारतीय भाषाओं के नाटकों

पर प्रभाव' इस विषय के बारे में भिन्न पद्धतियों का उपयोजन कैसा हो सकता है । इसका दिग्दर्शन प्रस्तुत लेखक ने अन्य दो किताबों में किया है ।

एक या अनेक दृष्टिकोण स्वीकार कर कौन-सा भी तुलनात्मक साहित्याभ्यास किया जा सकता है । पहले कालखंडीय 'पीरियड' तुलनात्मक साहित्याभ्यास होने के बाद ही सूक्ष्मदर्शी एक दृष्टिकोण केन्द्रित तुलनात्मक साहित्याभ्यास सफल हो सकते हैं । इनका प्रमुख उद्देश्य वाङ्गमयीन सम्बन्ध संस्कृतिकरण प्रक्रिया (अकल्चरेशन), संकर, अनुकरण, परिणाम प्रभाव छव उचल कोलाज, प्रतिध्वनि आदि प्रकार का नेटवर्क साहित्य कृति में कैसा होता है, ये ढूँढ़ना है । भारतीय साहित्य में पर्शियन-अरेबिक संस्कृत पाली-प्राकृत ElementS घटक के साथ यूरोपीय साहित्य घटक Elements का खूब मिश्रण हो गया है । ग्रामीण मराठी और हिन्दी प्रादेशिक बोली भाषा के शब्द, मुहावरों-कहावतों में 75% पचहत्तर प्रतिशत साम्य रहता है । ये साम्य स्टैण्डर्ड मराठी और हिन्दी में क्यों नहीं है ? हिन्दी के प्राध्यापकों या अनुसंधानकर्ताओं ने इसका कभी ख्याल किया है ?

तुलनात्मक साहित्य में थ्योरी-सिद्धान्त का प्रयोग होता है । लेकिन प्रैक्टिकस व्यावहारिकता को ज्यादा महत्व दिया जाना चाहिए । तुलनाकार मूलतः मूलभूतवाद, उत्तर उपनिवेशवाद चाहे वो घर का हो या बाहर का... स्वभावतः विरोधी रहता है । उनकी प्रतिबद्धता commitment वैचारिक उद्देश्य से ही रहती है । न वो राजकारण में जुड़ाव करने वाला या तोड़-फोड़ करने वाला रहता है । अनेक वाङ्मय, भाषा और उनके सम्बन्ध का अन्तर्विद्यावती विश्लेषण ही ये उनका ध्येय है । वो एक ज्ञानकोषकार, मानसशास्त्रज्ञ, इतिहासकार वगैरह और यदि जमें तो सर्जनाक्षम साहित्यिक होना चाहिए । एरविंन कोपेन ने ऐसा अभिमत प्रकट किया है ।

IV. तुलनात्मक साहित्याभ्यास के नये प्रवाह :

पहले हम फ्रेंच कॉन्सन्टस स्कूल में विकसित हुए सूत्रों पर विचार कर लें, उनका सूत्र ''टेकिंग द स्टेप टुवर्ड द अदर एण्ड स्टडी ऑफ द स्टेप दुवर्ड द अदर वन' है।

एन. शेवरेल का फार्मूला इस प्रकार है - साहित्य सम्बन्ध में दो भिन्न भाषा-संस्कृति-प्रदेश में प्रस्थापित होते समय कौन सी प्रक्रिया होती है ? उनमें स्वीकार करने वाले घर के और नयी भाषा साहित्य-विचार फैलाने वाली विदेशी (द अदर) इन दोनों की भूमिकाएँ महत्वपूर्ण हैं । विदेशी साहित्य कृतियों और संस्कृतियों से भेंट और उसके बाद होने वाले प्रक्रियाओं का अध्ययन करते समय भिन्न संस्कृतियों के लोग विदेशी साहित्यकृति और उनके लोगों को कैसे स्वीकृत करते हैं । इसका विवेचन बहुआयामी हो सकता है । परस्पर सम्बन्ध के स्तर इस सन्दर्भ में निम्नलिखित (जैसे) रहते हैं -

1. Neutral तटस्थ स्तर : 'क्ष' क्षेत्र में 'य' संस्कृति का ज्ञान नहीं होता । तब शून्य लेवल की स्थिति होती है ।

2. प्रक्षेपकों (एमिटर) के स्तर पर प्रभाव डालने वाले : 'य' का परिचय 'क्ष' देश में 'य' का ज्ञान 'च' की उपस्थिति और स्वागत 'क्ष' देश में होना ।

3. स्वीकार करने वालों के स्तर पर : 'य' द्वारा किये गये क्रियाओं की कैटेगरीज : भाग्य (फार्चून), यश, लौकिक, प्रसार, परिणामा, प्रभाव ।

4. 'पुनर्निर्मिती' या 'फेस केटेगरीज : फेस 'य' के वाङ्मय पद्धतियों की पुनर्निरमिती, 'य' के प्रतिबिम्वित 'क्ष' के आइने में, प्रतिध्वनि, संतदित्व (रेसीनन्स) विसंवाद, परावर्तन, अंग छेदन ।

5. 'क्ष' के दृष्टिकोण पर आधारित वर्ग-केटेगरीज-प्रतिक्रिया, मत, पढ़ाई, आलोचना, प्रशिक्षण पर यह आलोचना प्रशिक्षण पर यह समस्त सूची भी अधूरी है ।

इस प्रकार सूक्ष्मदर्शी तुलनात्मक साहित्याभ्यास के (सूक्ष्मदर्शी) स्तर पर अन्य सैकड़ों प्रकार भी तलाशे जा रहे हैं -

1. Thematic केन्द्रीय आशय वाला : Formal आकृति रूपबन्ध वाला अभ्यास : भागीरथ कथा का भारतीय साहित्य में प्रोयजन ये संशोधन एक देश से सम्बन्धित होगा ।

2. वैश्विक मध्यवर्ती आशय का अध्ययन : ''रूपान्तर (मेटॉमॉरफसिस' गुणाढ्य का कथा सरित सागर' काफ्का का मेटॉफॉरफानिस' गिरिश कर्नाड का हृदयवदन और विलास सारंग का द ट्री ऑफ वाइड में प्रयोजन' ये तुलनात्मक साहित्याभ्यास बहुत दर्जेदार बनेगा ।

3. घरेलू आशयाभ्यास भी अर्थपूर्ण बन सकते हैं । भारतीय और अन्य देशीय साहित्य में प्रेम और विवाह संकल्पना ये एक नमूना रहा ।

4. वाङ्मय प्रकारों का तुलनात्मक साहित्य अभ्यास भी बहुविध प्रकार का वन सकता है । एरिस्ट्रोक्टेरिक रोमान्स नाटक और काव्य, भारतीय और पश्चिमी नाट्य प्रकार, अभ्यास और नाटक आदि ।

5. मिथक या आदिबन्ध (Myths) : भारत के बारे में प्रसारित हुई अँग्रेजी साहित्य में प्रतिबिम्बित मिथक, कंजूसी का भारतीय और फ्रेंच साहित्य में चित्रण ।

6. प्रतिभाभ्यास इमेजोलॉजी : संस्कृति, मनोवृत्ति, प्रवृत्ति के बारे में परकीय साहित्य में कैसी प्रतिभाएँ तैयारी होती हैं, इस सन्दर्भ में शोध कार्य उपयुक्त होगा - भारतीय भाषामें में सरदारजी के जोक्स हिन्दी सिनेमा में ठाकुर की इमेज, कथा-साहित्य में प्रतिभा इमेज ऑफ रशिया इन फ्रेंच लिटरेचर मरीकटें ।

7. भाषांतरों का तुलनात्मक अध्ययन ।

8. साहित्य और अन्य कलाएँ : चित्रकला, फोटोग्राफी, स्थापत्य शास्त्र और उत्तर आधुनिकतावादी साहित्य वगैरह ।

9. वाङ्मयीन Movements

10. कालखण्डीय तुलना

11. भाषा-शैली तुलना

12. पाठक प्रतिसाद (रेस्पॉन्स) तुलना

13. अन्तर संहितात्मकता सम्बन्धी एक अलग आलोचना पद्धति विकसित हुई है ।

14. तुलनात्मक सौन्दर्यशास्त्र, तुलनात्मक, वाङ्मयेतिहास अभिव्यक्ति आदि । सन्दर्भ 'कबीर एवं वेमना : एक अध्ययन' लेखक - रोहिताश्व ।

15. साहित्य सिद्धान्त की तुलना : भारतीय सौन्दर्यशास्त्र और मार्क्सवादी सौन्दर्यशास्त्र की तुलना सन्दर्भ 'मार्क्सवादी सौन्दर्यशास्त्र की भूमिका' रोहिताश्व । समकालीन कविता : मार्क्सवादी सौन्दर्यशास्त्र के परिप्रेक्ष्य में ।

असंख्य उपशाखाएँ तुलनात्मक साहित्याभ्यास में विकसित हो रही हैं । यह नया क्षेत्र नया अभ्यासकर्ताओं के लिए बड़ी चुनौती है । भारत में अलग तुलनात्मक साहित्याभ्यास की पद्धति कव तैयार होगी कहा नहीं जा सकता । आज तो हम अमेरिका, फ्रेंच, एशिया की इन तीन पद्धतियों पर ही दिन गुजारा करते हैं । स्वतन्त्र भारतीय सौन्दर्यशास्त्र अथवा नया सौन्दर्यशास्त्र इन प्रवल पद्धतियों के प्रतिकार से ही विकसित develop होगा। इस स्थिति में तुलनात्मक साहित्याभ्यास के गठन की सम्भावनाएँ और अनिवार्यताएँ महसूस की जा रही हैं ।

सन्दर्भ सूची

पत्रिकाएँ :

1. कम्प्रेटिव्ह लिटरेचर : सुजेन और गान विश्वविद्यालय, अमेरिका
2. कम्परेटिव्ह लिटरेचर स्टडीज़ : भुंवोना विश्वविदयालय इलिनाइस अमेरिका
3. इयरबुक ऑफ कम्परेटिव्ह एण्ड जनरल लिटरेचर
4. जाधवपुर जर्नल ऑफ कम्पेरेटिव्ह लिटरेचर जाधवपुर विश्वविद्यालय, कलकत्ता ।
5. जर्नल ऑफ कम्पेरेटिव्ह लिटरेचर एण्ड लैंग्वेज : मेरठ भारत
6. प्रेसिडिंग्स ऑफ काँग्रेस ऑफ द इण्टरनेशनल कम्पेरेटिव्ह लिटरेचर एसोशिएशन ।

ग्रन्थ (Books) **:**

- आस्ड्रिज ए. ओवेन (सं.) कम्पेरेटिव्ह लिटरेचर : मेटर एण्ड मेथड लन्दन : यूनिवर्सिटी ऑफ इलिनाइस 1969
- असेइन एस. ओ. कम्पेरेटिव्ह एप्रोचेस द अफ्रीकन लिटरेचर इवादान : इवादान यूनिवर्सिटी, प्रेस नाइजेरिया, 1982
- चौधरी इन्द्रनाथ : तुलनात्मक साहित्य की भूमिका : दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा : मद्रा, 1983
- देव अमिया, शिशिर कुमार दास (संपा) - कम्पेरेटिव्ह लिटरेचर : थ्योरी एण्ड प्रेक्टिस : दिल्ली : अलाइड पब्लिकेशन, 1989

- बेर्नहायमर चार्ल्स, (संपा) कम्पेरेटिव लिटरेचर इन द एज ऑफ मल्टिकल्चरलिज्म, वाल्टिमोरः जान्स हायकिन्स यूनिवर्सिटी प्रेस 59
- गासमन लायोनेल और स्पटीसु मिथाई मिथाई, बिल्डिंग व प्रोफेसन : ओटोबाईग्राफिकल, पर्सेक्टिव्हज ऑन द बिगिनिंगज ऑफ कम्परेटिव्ह लिटरेचर इन द यूनाइटेड स्टेट्स : अलबनी एन. आय. स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूयार्क प्रेस, 1994
- ग्यूलियन क्लडियाँ द चेलेन्ज ऑफ कम्पेरेटिव्ह लिटरेचर, कैम्ब्रिज : मी. हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1993
- गिफोर्ड हेनरी : कम्पेरेटिव्ह लिटरेचर, लन्दन : रूटलेज एण्ड केगनपाल 1969
- लेव्हिन हैरी. रिफ्रंक्शन्स : एक्सेज इन कम्पेरेटिव लिटरेचर लंदन 66 ग्राउण्ड्स फॉर कम्परिझन हावर्ड यूनि. प्रेस, 1972
- नगेन्द्र चौधरी (संपा) : कम्परेटिव्ह लिटरेचर दिल्ली विश्वविद्यालय 79
- मजूमदार स्वप्न : कम्पेरेटिव्ह लिटरेचर कलकत्ता, लैपिरस, 1993
- मुखर्जी मीनाक्षी : रियलिज्म एण्ड रियलिटी : द नाव्हेल अण्ड सोसायटी इन इंडिया, दिल्ल, मी. यु. पी., 1985
- नेमाडे भालचन्द्र : द इन्फ्लुइन्स ऑफ इंग्लिश ऑन मराठी, पणजी, राजहंस, 1989
- पाटिल आनन्द : बेस्टर्न इन्फ्लुएन्स ऑन मराठी ड्रामा, पणजी, राजहंस, वितरण 1993
- पाटिल आनन्द : मराठी नाटकावरील इंग्रजी प्रभाव, मुम्बई, लोकवाङ्गमय गृह, 1993
- पणीकर के. ओ. (संपा) स्पॉट लाईट ऑन कम्परेटिव्ह लिटरेचर
- प्रॉवर एस. एस. कम्परेटिव्ह लिटरेचर स्टडीज लंदन : जेराल्ड ड्यूक्सवर्थ, 1973
- सॉबिम मार्जेरी इंग्लिश रोमाण्टिसिज्म अंड फ्रेन्च ट्रैडीशन लंडन हार्वर्ड यूजि. प्रेस, 1976
- सच्चिदानन्दन व्ही. व्हिटमन अंड भारती : ए कम्परेटिव्ह स्टडी : बॉम्बे मैक्सीलन 1979
- बेईस्टाइन युलरिच काम्परेटिव्ह लिटरेचर अण्ड लिटररी थियरी : इंडियाना यूनी. 1973
- कोएल्ब, क्लेटन, और सुसन नीअंकेज संपा. द काम्परेटिव्ह पर्स्पेक्टिव्ह ऑन लिटरेचर अ प्रोसेस टू थियरी अंड प्रक्टिस, इथाका कॉर्जेल यूनि. 1988
- सईद एडवर्ड - कल्चर अंड इम्पीअरिलिज्म, लंडन चटो अंड विण्डूस 1993
- विश्वनाथन गौरी का मास्क्स ऑफ क्वानक्वेस्ट लिटररी स्टडी अंड ब्रिटिश रूल इन इंडिया लंडन फेबर अंड फेबर 1989
- पोर्टन मायकेल और स्टील ज्युडिथ सम्पा. इंटरटेक्सट्युयालिटी थेयरिन अंड प्रेक्टीस न्यूयार्क, 1990 ।